भगवत् कृपा

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष–15, अंक–3 बुधवार, 26 मार्च.' 92	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी मार्च, 1992	वार्षिक चन्दा–10.00 प्रति अंक : 1.00

आओ, हम 'योगी शताब्दी' मनायें........

[योगी शताब्दी का मंगल पर्व खूब करीब आ गया है.....

तो, प.पू. काकाश्री द्वारा स्वयं के हीरक महोत्सव (60वीं जन्म जयंती) पर हमें पूछे नीचे के चार प्रश्नों पर सतत् चौकन्नी निगाह रखकर भीतर से टटोलें....

और सुरुचि रखकर उसके मुताबिक वर्तने लग पड़े।

यही हमने सच्ची योगी शताब्दी मनाई मानी जाएगी।

महाराज, स्वामी, ब्र.स्व. शास्त्रीजी महाराज, ब्र. स्व. योगीजी महाराज, गुरुहरि काकाजी महाराज और प्रत्यक्ष स्वरूपों इस हेतु हमें खूब बल दें–यही प्रार्थना !]

''व्यवहारिक बुद्धि छोड़ कर–सचमुच,

- ☐ योगीजी महाराज को जो करना था उसके लिए हम तैयार (तत्पर) हैं?
- ☐ योगीजी महाराज का जो अभिप्राय था–जो भावना थी–वह हमारे दिल में अखंड रहती हैं?
- ☐ योगीजी महाराज की जो योजना थी कि पाँच पचास-दौ सौ जनों को तैयार करना–उसके लिए चौबीस घंटे में से एक घंटा दिल की सच्चाई से हमारा प्रयत्न (कोशिश) है?
- ☐ अन्दर-अन्दर दूसरों को उपदेश करते हैं–परामर्श देते हैं, पर वही स्वयं पर लागू करके हम वर्त पाते हैं?

–ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज

चलो......हरिधाम........

- तुलसी जाके मुखन से, भूले निकसे राम,
  ताके पग की पहेनियाँ, मेरे तन की चाम।
- सत्संग में अभाव, अवगुणरुपी खटाई यदि हम न पड़ने दें
  तो सत्संग का सुख एकदम मीठे आम जैसा आये
  इसलिए संतों व हरिभक्तों में दिव्यभाव रखना– निर्दोषबुद्धि रखना।
  यदि कोई ऐसा करे,
  तो,
  कुछ करना बाकी नहीं रहे।
- मुझे 50 वर्ष सत्संग मेंहुए
  किसी दिन–
  किसी सत्संगी
  छोटे से छोटा चाहे हो,
  अरे ! लल्लू जैसा हो,
  उसमें कुछ बरकत भी ना हो
  उसका भी अभाव आया नहीं है।
  विरोधी हो, चाहे कैसा भी हो
  तब भी–
  अभाव आया नहीं है।
- यदि कोई दो शब्द कह दे
  तो सहन कर लेना।
  अपनी भूल ना हो,
  तो भी सहन कर ले
  वह एकांतिक।
  सहन करे वह एकांतिक।
- सब आपस में संप रखें।
  एक-दूसरे की महिमा समझें।
  एक-दूसरे के पास झुकें
  और
  सुहृदभाव रखें।
  तो, सत्संग बढ़ेगा।
  दूसरी कुछ भी बात नहीं करनी,
  यही एक बात करनी है।
- भजन कर लेना....
  चौबीस घंटे......
  स्वामिनारायण.....स्वामिनारायण

गुरुहरि योगीजी महाराज द्वारा बोले गये ये वचन ही उनके स्वरूप का पूर्ण परिचय दे देते हैं....

गुरुहरि योगीजी महाराज.....भगवान स्वामिनारायण की चौथी पीढ़ी के अनुपम वारिसदार...... निःस्वार्थ वात्सल्य का अनुपम घोघ बहाकर अनंत चैतन्यों को माया से पर किया–ऐसा कल्याणदाता ! जिसने एक 'माँ' की तरह जतन करके चैतन्यों का उत्थान किया। अनंत मतमतांतरो, सिद्धांतों, मान्यताओं, विचारों से पर, संबंध मात्र में आने वालों का जिसने अकारण भला ही किया....लोक व परलोक दोनों में सुखी करने की चाहना रखने वाले साधुता के मूर्तस्वरूप गुरुहरि योगीजी महाराज के पवित्र चरणार्विन्द में शताब्दी के परम पवित्र अवसर पर करोड़ों वंदन...चातक की तरह जिसकी राह हम सब देख रहे थे, वह 'योगीजी महाराज की शताब्दी' आ पहुँची..... अहो हो ! यह सुनने मात्र से ही हमारा समग्र तन्त्र नाच उठता है.....अपने जीवनकाल में ही यह भव्य मंगल अवसर आया......हम सभी के 'बापा' की शताब्दी !

बापा का विशाल जीवन, उनका कार्य, उनके अनंत गुण, अनेक भक्तों को उनके द्वारा हुए दिव्य

अनुभव, अनेक चमत्कारों, अवतरित उपदेशधारा, यह सब लेखनी द्वारा लिखना तो अत्यन्त कठिन ही नहीं, बल्कि नामुमकिन ही है। शास्त्रों में लिखा है कि तेजस्वी को सीमित मन-बुद्धि से नापा नहीं जा सकता। वास्तव में तो भगवान रखे ऐसे महान् पुरुषों को मापने का मापदण्ड अभी तक बना ही नहीं है। फिर भी उनकी शताब्दी पर भक्ति भरे हृदय से उनके चरणों में अपनी श्रद्धा के फूल अर्पण करें, ताकि अपने मन की भूल-भूलैया में रहकर स्वयं को धन्य करने का यह सुअवसर हम कहीं चूक ना जायें।

बापा के जीवन के बारे में क्या लिखें? सच ! लेखनी शून्य हो जाती है....और विचार आता है कि कैसी कल्पनातीत विभूति पृथ्वी पर प्रगट हुई थी। हमारी कल्पना में भी ना सके इतनी सादगी !! इतना छुपे रहकर अनोखा कार्य वे करके गये–जिसका कुछ दर्शन आज हो रहा है। एक ही वाक्य में यदि कहा जाये–**योगीजी महाराज यानी सभी के दास बनकर, गरीब भाव से, गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज के अल्प सम्बन्ध वालों की भगवान के भाव से ही सेवा करके हरेक के जीवन में स्थान लेने वाली विरल विभूति**.....जाने-अनजाने बापा का केवल एक ही धब्बा खाने वाला व्यक्ति मुक्त बनकर अक्षरधाम का अधिकारी बन गया। **'बापा मेरे ही हैं'** और धब्बा खाने वाला जब-जब जीवन में आज भी इस स्मृति को याद करता है, तब-तब उसका रोम-रोम आनन्दविभोर हो उठता है।

बापा की अलौकिक स्थिति का दर्शन तो बाल्यकाल से ही होता था। उनकी उत्कृष्ट वैराग्य भावना, असाधारण भक्ति तथा नियम पालन, सादगी, संतोष, सेवा, मुख पर अखंड हास्य–उनके दर्शनमात्र से आधि, व्याधि, उपाधि टल जाती। हृदय में शान्ति अनुभव होती।

भारत के Ex. Prime Minister श्री गुलजारीलाल नन्दाजी ने गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज से जब आखिर के दिनों में पूछा कि **'अब ऐसा सुख कौन देगा?'** गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज बोले थे–**योगीजी महाराज सब सुख देंगे....चिन्ता नहीं करना।**

योगीजी महाराज की वाणी सीधी हृदय से आती.....उनका उपदेश, संदेश मंत्र–एक ही–**भगवान भज लो**......और उनकी जीवन भावना–**भगवान सबका भला करे** !

गुरुहरि योगीजी महाराज खूब ही गरीब, खूब ही गरजु और अद्वितीय गुलाम बनकर ही पूरा जीवन जीये। गुरुहरि योगीजी महाराज को केवल एक ही बार रसोई की सेवा सौंपी...40 साल तक बापा रसोई में ही रहे.....कभी दोबारा शास्त्रीजी महाराज को देखना नहीं पड़ा। रसोई में भी अहोभाव से सेवा.....हरिभक्तों की राह देखना....उन्हें गरम-गरम खाना खिलाना....कई कई बार तो स्वयं के लिए खाना न बचने पर वे केवल पानी पीकर चला लेते। यूँ अपने हिस्से का भी खाना हरिभक्तों को खिला देने के कारण एक बार लगातर तीन दिन तक किसी को भी सहज जताये बिना बापा भूखे ही रहे....चौथे दिन गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज ने अन्तर्यामी रूप से वह सब जानते हुए बिना किसी प्रोग्राम ही वहाँ आकर अपने इस लाडले अजोड़ शिष्य को तीन बेसन के छोटे-छोटे लड्डु का प्रसाद दिया.....उस प्रसाद की मस्ती बापा को जीवन की आखिरी घड़ी तक रही.....

बापा ने 'सेवा' शब्द पर तो शास्त्रों में लिखी बातों पर सेरे लगा दिये....युगों-युगों तक उनके द्वारा की सेवा श्रेयार्थी साधकों के लिए पथ-प्रदर्शित

करती रहेगी। बापा को सेवा का कैसा माहात्म्य था–यह नीचे लिखे प्रसंगों को निहारने पर ख्याल पड़ता है।

गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज जब स्थावर मन्दिर बनाने का अद्‌भुत कार्य कर रहे थे....तब बापा ईंटे उठाकर ऊपर चढ़ाने की सेवा कर रहे थे। ईंटे उठाते अचानक एक ईंट बापा के हाथ से गिरकर टूट गयी। ईंट गिरने के साथ जैसे बापा तो शून्यमनस्क हो गये कि यह मुझसे क्या हो गया? ढ़ाई घंटे तक बापा ने प्रायश्चित रूप भजन किया कि अरे ! अरे ! मुझसे आज ठाकुरजी की एक ईंट का नुकसान हो गया.....सच ! बापा की ठाकुरजी के प्रति कैसी भक्ति?

एक बार बापा संतों को सौराष्ट्र में पंचतीर्थी कराने ले गये थे। सब जगह बापा प्रसादी के स्थानों का माहात्म्य समझाकर दण्डवत् करने कहते.... पंचतीर्थी करते-करते सब जूनागढ़ मन्दिर पहुंचे.... जूनागढ़ मन्दिर में एक पत्थर के पास बापा ने सबको दण्डवत् करने के लिए कहा.....लेकिन बापा ने उस स्थान के बारे में पहले कुछ बताया नहीं, जबकि अन्य सभी स्थानों पर बापा पहले से ही उस स्थान का माहात्म्य समझाते थे। सभी ने दण्डवत् तो किया और किसी संत ने बापा को पूछाः बापा ! इस स्थान की विशेषता क्या ? तब बापा ने बताया–**'जब मैं जूनागढ़ मन्दिर में सेवा करता था, उस समय मैंने सबको यह जगह बता रखी थी कि मेरी सेवा से फारिग होकर मैं यहाँ बैठा मिलूँगा.... जब भी किसी को मेरी जरूरत पड़े तो मझे यहाँ से बुला लेना। अगर मैं यहाँ नहीं मिलता तो सब जान लेते कि मैं कहीं और सेवा में हूँ.....'**

सब यह बात सुनकर स्तब्ध रह गये...कि बापा को 'सेवा' का कैसा इश्क कहा जाये या अद्‌भुत माहात्म्य....! हम तो सेवा से थककर मन्दिर का कोई ऐसा कोना ढूँढेंगे कि कहीं किसी की नजर में न आ जाएं ताकि वहाँ आकर हमें disturb करे...जबकि बापा !!!

धन्यवाद-धन्यवाद 'सेवा' के उस मूर्तस्वरूप को.....

रोम-रोम में अखंड महाराज को धारण किये साधु, सर्वज्ञ और अन्तर्यामी होते हुए सबके दास होकर ही वर्ते....दासत्व भक्ति तो उनके शब्दों में, उनके मुख से, उनके हलन-चलन में, उनकी हरेक क्रिया में सहज ही दिखाई पड़ती थी। एक बार एक युवक ने बापा को कहा कि–बापा आज तो 'बोचासण में भारी जय-जयकार हो गया' आपकी जयन्ती अद्‌भुत मनायी गयी.....यह सुनकर बापा सहजता से बोल उठे–**'यह तो गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज का भव्य प्रताप है–वर्ना इस जोगी को कौन पूछता था।'**

योगी बापा एक दिन अपनी गाड़ी में विचरण कर रहे थे। उन दिनों एक युवक ने अपने मित्र को कहा कि 'यह गाड़ी योगी बापा की है'–उसी समय बापा वहाँ से प्रसार हो रहे थे। बापा उस युवक की बात सुनकर एकदम बोले कि **'यह गाड़ी तो महाराज की है, शास्त्रीजी महाराज की है–अपनी है, ऐसा नहीं कहना–नहीं तो अपने को पाप लगेगा।'** बापा का कैसा दासत्व?

एक बार बापा युवकों को बात करते हुए बोले थे 'शास्त्रीजी महाराज की सेवा में हजारों देह चंदन की तरह घिस देवें तो भी शास्त्रीजी महाराज का ऋण नहीं चुकाया जा सकता।' कैसी गुरु महिमा?

एक बार राजकोट में योगी बापा का हर्निया का operation कराया.......operation से पहले उन्हें क्लोरोफार्म सुंघाया था। operation पूरा होने के

थोड़ी देर बाद जब क्लोरोफार्म की असर कम हुई और बापा जैसे ही थोड़े होश में आये, उसी क्षण साथ में खड़े सेवक को बोले कि शास्त्रीजी महाराज को दूध पिलाया? बापा की यह बात सुनकर सब स्तब्ध रह गये....तीनों अवस्थाओं में गुरु का ही एक मात्र अनुसंधान.... (गुरु के साथ) उनका कैसा अद्‌भुत संबंध रहा होगा?

बापा के जीवन में महाराज और शास्त्रीजी महाराज दो ही शब्द थे....स्वयं अक्षरधाम के अधिपति होते हुए भी जात-कुजात, दोष-स्वभाव, प्रारब्ध-प्रकृति, जड़-चेतन कुछ भी देखे बिना हरेक के आत्मीय बने, सुहृद बने....अकारण सबका भला ही करा बस positive thinking.....सामान्य से सामान्य निरर्थक लगती बात से भी बापा केवल गुण ही ले लेते....

गुरुहरि योगीजी महाराज ने अक्षरपुरुषोत्तम की सनातन और शुद्ध उपासना प्रवर्ताने खूब परिश्रम किया। जीवन भर लहू का पानी किया... श्री अक्षरपुरुषोत्तम सम्प्रदाय यानी गुरुमुखी सम्प्रदाय..... गुरुहरि योगीजी महाराज ने अपने गुरु द्वारा बोये गुणातीत वृक्ष की केवल जड़ें ही मजबूत नहीं की, बल्कि युगल उपासना के इस वृक्ष को, अपने गुरु के वचन की ओर निगाह रखकर पूर्णता से फलते-फूलते बगीचे के रूप में विकसाया। सच ! योगीजी महाराज की कैसी करुणा.... उनका ऋण हम कैसे चुका पायेंगे.....? उन्होने हमें प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारी स्वामीजी, प.पू. साहेब—स्वयं जैसे ही योगी स्वरूपों की अनुपम भेंट दे दी....इस प्रकार एक अद्‌भुत विशाल गुणातीत वृक्ष की स्थापना की और उनके लाडले वारिसदार प.पू. काकाजी ने तो एक बार इस गुणातीत वृक्ष की अनोखी विशेषता बताकर हरेक की दृष्टि बदल दी। सामान्य रूप से यदि देखा जाये तो आम के वृक्ष पर आम ही आते हैं, परन्तु प.पू. काकाजी ने इस वृक्ष का जो चित्र बनाया, वह इस प्रकार था कि इस वृक्ष की एक डाल पर आम, तो दूसरी पर चीकू, किसी पर केला तो किसी पर संतरा अर्थात् सभी डाल पर भिन्न-भिन्न फल होते हुए भी उनकी मूल जड़ तो एक ही है। मानो आम यह न माने कि मैं ही बस मीठा हूँ। अपने-अपने स्थान पर सभी सही....उसी प्रकार बापा द्वारा तैयार करे प्रगट योगी स्वरूपों व मुक्तों की रीति-नीति हमारी मायिक दृष्टि से भले भिन्न दिखायी पड़ती हो, परन्तु हम यह तो स्वप्न में भी न भूलें कि मूलतः इन सबकी जड़ अक्षरपुरुषोत्तम—ब्रह्म और परब्रह्म ही है। अर्थात् सभी स्वरूपों—सभी मुक्तों एक सरीखे.....न कोई बड़ा, न कोई छोटा.... आज सुहृदभाव की नींव पर खड़े फलते-फूलते इस वृक्ष को हम सभी देख रहे हैं।

लाखों शिष्यों के गुरु होते हुए भी बड़प्पन से दूर....अत्यन्त निर्मानी......सामान्य हरिभक्त के भी सुख-दुःख के साथी.....योगीजी महाराज का निर्मल प्रेम सबको खींच लेता....अनेकों के व्यसन उन्होंने दूर किये....उनका प्रेम ही सामने वाले के जीवन में सम्पूर्ण परिवर्तन ला देता। बापा की प्रेमल मूर्ति असद् मार्ग पर चलने वाले को सद्‌मार्ग पर प्रेरती। देश की युवा पीढ़ी को भौतिकवाद, नास्तिकवाद तथा आलस-प्रमाद में से निकालकर नयी दृष्टि, नयी दिशा प्रदान की। 51 शिक्षित युवानों को गढ़डा में साधु की दीक्षा देकर आध्यात्मिक क्रान्ति की....आत्मकल्याण के मार्ग पर महाप्रस्थान करने वाले वे युवान साधु आज विश्व में गुणातीतज्ञान के setalites बनकर

अक्षरपुरुषोत्तम महाप्रभु के नाम को दिगंत में फैला रहे हैं.....

अभी तक शास्त्र व समाज बोलते थे कि स्त्रियाँ एकांतिक धर्म सिद्ध नहीं कर सकतीं....पर बापा ने 1952 में प.पू. पप्पाजी को कहा कि **'बहनें भगवान भजें तो क्या बुरा? महाराज जोग दे देंगे'**.....और इस प्रकार 'गुणातीत ज्योत' द्वारा बहनों का एकांतिक धर्म सिद्ध करने का मोक्ष द्वार खुल्ला कर दिया......

आज हम सब देख रहे हैं कि बापा ने जो गृही, बहनों, संतों, युवकों के अद्‌भुत दिव्य गुणातीत समाज की स्थापना की थी....वह बगीचा आज देश-विदेश में महक रहा है.....इस बगीचे के फूलों की सुवास सहज ही सबको अपनी ओर आकर्षित करती है।

सो ऐसे गुरुहरि योगीजी महाराज की शताब्दी कैसे मनायें ?

योगी शताब्दी निमित्त हम हमारा वर्तन—हमारा जीवन केवल प्रत्यक्ष योगी स्वरूपों राजी हों, उस रीत से जीकर अखंड उनकी अनुवृत्ति में रहकर उनकी योजना में साथ दिया करें...बापा सारे शास्त्रों का साररूप गुणातीत ज्ञान का नवनीत दे गये हैं—जो हमारे प.पू. काकाजी को खूब पसन्द था.... सो प्रगट योगीस्वरूपों को राजी करने निम्नलिखित वे छः वचन हमारी साधना का आधार बनें.....

1. किसी का देखना नहीं।

2. पहले स्वयं का कर लेना।

3. परेशानी-उदासी आये तो माला लेकर भजन करने बैठ जाना, पर अन्य कोई negative विचार नहीं करना।

4. हरेक में निर्दोषबुद्धि रखना।

5. संप, सुहृदभाव और एकता रखना।

6. साक्षात् स्वरूप की महिमा निरन्तर गाया करनी।

अपना बन्दर मन छोड़कर यह करने लग पड़े—वही सच्ची योगी शताब्दी मनायी कही जायेगी। गुरुहरि योगीजी महाराज तो हमारे स्वयं के कल्याण के लिए किये गये इस उद्यम को भी भक्ति मानकर—हमें व्यवहारिक व आध्यात्मिक विकास के लिए अनोखा बल व पवित्र बुद्धियोग दे ही देंगे....आईये, हम सभी यह करने कृतनिश्चयी बनें......

❄ ❄ ❄ ❄

हमारा परम सौभाग्य है कि 'योगी शताब्दी' का यह परम पवित्र महोत्सव साक्षात् योगी स्वरूपों गुरुहरि प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेब की निश्रा में हरिधाम—सोखड़ा में दि. 9, 10, 11 अप्रैल' 92 को भव्यता से मना रहे हैं.... आइये, आईये आप सभी को इस महामंगलकारी अवसर पर हरिधाम आने का, दर्शन, सेवा, समागम का अमूल्य लाभ लेकर आशीर्वाद प्राप्त करने का हार्दिक निमंत्रण है.....

ब्रह्मप्रवाह

दृष्टिभेद

गिरिनार पर खड़े हुए को हिमालय का कहाँ से पता चले? अनादि काल से शास्त्रकारों की भूमिका, स्थान और स्थिति जितने विकसित हुए इतने रूपांतरो भिन्न-भिन्न स्वरूप में दृष्टि भेद के रूप में अनुभव वाणी में लिखे गए, वेदों में वर्णित हुए और गीता व भागवत जैसे महाग्रन्थों द्वारा समझाने में ईश्वर प्रणित बने। सर्वोपरि ज्ञान पथ्य बने, मूर्तिमान जीवन मुक्त दशा में सबीज अनुभव हो सके, भोगा जा सके और साक्षात् प्राप्ति प्रतीति रूप में सजीव बने इस हेतु की पूर्व भूमिका स्वामिनारायण भगवान ने पूर्ण करी और मूलअक्षर गुणातीतानंदस्वामी तथा महामुक्त गोपालानंदस्वामी व अक्षरमुक्तों द्वारा वह ज्ञान प्रकाश विकास को पाता गया। अपने सम्प्रदाय में इस भेद को परम पूज्य गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने संतों के साथ विचरण करके अक्षरपुरुषोत्तम की शुद्ध उपासना द्वारा प्रवर्ताया और पूज्य साक्षात् ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज द्वारा मूर्तिमान किया। अमृत के अविनाशी झरने जैसे अक्षरधाम के दिव्य अक्षरमुक्त, जीवनमुक्त दशा का अनुभव करते प्रत्यक्ष स्वरूपों द्वारा साबित करके बताया। प्र. 71, अंत्य. प्र.9-31-38 तथा अंत्य. प्र.2 के मुताबिक परोक्ष की तरह प्रत्यक्ष की प्रतीति, दर्शन, स्थिति व गुणातीत ज्ञान का महाबगीचा सहज में तैयार किया। फलस्वरूप कई बड़े-बड़े हरिभक्तों तथा संतों हमारे लिए उदाहरण बने हुए हैं। पर जैसी दृष्टि, वैसे भेद नजर आते हैं।

चित्त के निरोध को गीता में महायोग की पूर्णता कही है। परन्तु वहाँ दृष्टा दृश्य के बीच दृष्टि भेद अति सूक्ष्म होकर, आत्मसाक्षात्कार देह रखते हुए ही अनुभव किया जा सके वह कृतकृत्यता अधूरी रही; क्योंकि पुरुष-प्रकृति के भेद से–आत्यंतिक मुक्ति की सर्वोपरि ब्रह्म-परब्रह्म भेद की विशिष्टता कि स्वामिनारायण भगवान सर्व अवतारों के भी अवतारी और सर्वोपरि है व मूल अक्षर गुणातीतानंदस्वामी–वह भी जीव का मूलस्वरूप है यह भीतर में उतरा नहीं था। सो प्रकृतिभेद कारण शरीर के रूप रहता ही रहा। मूल ब्रह्म के संग मनन द्वारा संत समागम से प्रकृति भेद को पार करने ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म की झाँकी हुई–ख्याल आया और जो वासना–सूक्ष्म भेद-पिंड व ब्रह्मांड-ब्रह्म और परब्रह्म के बीच वासना रूप अविद्या के रूप में मूल अज्ञान स्थिति में दृढ़ रूप से बैठा हुआ, वह दूर होने पर सच्चिदानंद स्वरूप प्रगट होता है और अब पुरुषोत्तम के आकार रूप वृत्ति होती है और दासभाव से सच्चे संतों की और हरिभक्तों की सेवा में ही जीवन व्यतीत होता है (वच. सा.17)।

सर्वोत्तम अभेद भाव अनुभव करते हुए आत्मा-परमात्मा का दिव्य आनंद प्राप्त होता है और जीव, ईश्वर, माया, ब्रह्म व परब्रह्म के स्वरूपों–प्रकाश, सत्ता, सुख, सामर्थी दिखाई पड़ते है। देह रहते हुए ही अक्षरधाम का सुख और प्राप्ति अखंड बनते हैं और ऐसे भक्त की जहाँ-जहाँ दृष्टि पड़ती है, वहाँ महाराज और स्वामी दिखाई पड़ते हैं। वहाँ सनातन प्रकाश का पुंज और उसके बीच महाराज की दिव्य मूर्ति अखंड दिखती रहती है और परिपूर्ण अनुभव करते हुए, महाराज की इच्छानुसार दासभाव से सेवा भक्ति करते हुए प्रगट संतों के चरणों में रहकर, समस्त सत्संग, छोटे-बड़े हरिभक्तों में अपार दिव्यता लगती है और सत्संग अपना ही माना जाता है।

दृष्टि भेद में बदलाव आते, दूसरों की देह,

दूसरों का दोष और आकार अभेदरूप से अभेदोभियाँ विलीन होने से, अखंड शुभ संकल्प.... शुभ वृत्तिरूप में..... मंगलकारी ही भावना से, कल्याणमय, प्रकृति जीवनपर्यन्त होती जाती है और परमपद, सुख, आनन्द, शांति, धन्यता स्थायी बन जाती है। परमात्मा सहजानंद पर के पर रहते हैं जिसका वर्णन परावाणी और अनुपम वाणी से भी हो सके वैसा नहीं।

यह लाभ अभी पू. योगीजी जैसे श्रेष्ठ संतों की सेवा व मुक्तों हरिभक्तों में सुहृदभाव रखकर, दिव्यता देखने से और माहात्म्य ज्ञान सहित भक्ति से मिल सकता है। सो वह हरेक को जरूर प्राप्त कर लेना चाहिए। ऐसा योग प्रगट की उपासना और आज्ञा–'निजात्मानम् ब्रह्मरूपम्' के मुताबिक पंचवर्तमानयुक्त वर्त कर पालने से, गुरुहरि का मिला है। वह परमात्म–दृष्टिभेद सहज में ही सधाते हैं और देह रहते ही गुणातीत करते हैं।

सत्संग में गुणातीत स्वरूपों अखंड दिव्य ज्योति रूप से सनातन, सर्वोपरि, सर्वज्ञ, सर्वाधीश श्रीजी स्वामी के गुणगान करते-करते जलते ही रहें और दूसरों को भी ऐसा ही सर्वोत्कृष्ट सुख की प्राप्ति कराये ऐसी पू. शास्त्रीजी महाराज व संतों को हमारी सच्चे दिल की अभ्यर्थना है। स्वामिनारायण प्रकाश के ग्राहक अपने आप ही बढ़कर पू. स्वामी बापा के कार्य को अधिक वेग से बढ़ायें और सब कोई सहकार दें ऐसी नम्र प्रार्थना है।

–प.पू. काकाजी महाराज
दिसम्बर 1953

❄ ❄ ❄ ❄

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	30.3.92	सोमवार	पापमोचनी एकादशी, व्रत
2.	दि.	9.4.92	गुरुवार	योगी शताब्दी महोत्सव हरिधाम, सोखड़ा में
3.	दि.	10.4.92	शुक्रवार	योगी शताब्दी महोत्सव हरिधाम, सोखड़ा में
4.	दि.	11.4.92	शनिवार	रामनवमी, भगवान श्री स्वामिनारायण की जयन्ती व योगी शताब्दी महोत्सव हरिधाम, सोखड़ा में
5.	दि.	13.4.92	सोमवार	एकादशी, व्रत
6.	दि.	15.4.92	बुधवार	ब्र.स्व. योगीजी महाराज का दीक्षा दिन,
7.	दि.	17.4.92	शुक्रवार	पूर्णिमा

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashok vihar-III, Swaminararan Marg. Kakaji Lane,
Delhi-110 052. (India) Tel. : 7229327, 7249327
Printed at **R.P. Printers,** Shahadra, Delhi-110032